

---

# Shri Bhairava Ashtakam

---

## श्रीभैरवाष्टकम्

---

### Document Information



---

Text title : Bhairava AshTaka

File name : bhairavAShTakam.itx

Category : aShTaka, shiva

Location : doc\_shiva

Transliterated by : Gopal Upadhyay gopal.j.upadhyay at gmail.com

Proofread by : Gopal Upadhyay

Latest update : October 15, 2016

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 16, 2023

*sanskritdocuments.org*

---



श्रीभैरवाष्टकम्



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः ॥

॥ श्रीगुरवे नमः ॥

॥ श्रीभैरवाय नमः ॥

सकलकलुषहारी धूर्तदुष्टान्तकारी  
सुचिरचरितचारी मुण्डमौञ्जीप्रचारी ।  
करकलितकपाली कुण्डली दण्डपाणिः  
स भवतु सुखकारी भैरवो भावहारी ॥ १ ॥

विविधरासविलासविलासितं नववधूरवधूतपराक्रमम् ।  
मदविधूणितगोष्पदगोष्पदं भवपदं सततं सततं स्मरे ॥ २ ॥

अमलकमलनेत्रं चारुचन्द्रावतंसं  
सकलगुणगरिष्ठं कामिनीकामरूपम् ।  
परिहृतपरितापं डाकिनीनाशहेतुं  
भज जन शिवरूपं भैरवं भूतनाथम् ॥ ३ ॥

सबलबलविघातं क्षेत्रपालैकपालं  
विकटकटिकरालं ह्यदृहासं विशालम् ।  
करगतकरवालं नागयज्ञोपवीतं  
भज जन शिवरूपं भैरवं भूतनाथम् ॥ ४ ॥

भवभयपरिहारं योगिनीत्रासकारं  
सकलसुरगणेशं चारुचन्द्रार्कनेत्रम् ।  
मुकुटरुचिरभालं मुक्तमालं विशालं  
भज जन शिवरूपं भैरवं भूतनाथम् ॥ ५ ॥

चतुर्भुजं शङ्खगदाधरायुधं  
पीताम्बरं सान्द्रपयोदसौभगम् ।  
श्रीवत्सलक्ष्मीं गलशोभिकौस्तुभं  
शीलप्रदं शङ्कररक्षणं भजे ॥ ६ ॥

लोकाभिरामं भुवनाभिरामं  
प्रियाभिरामं यशसाभिरामम् ।  
कीर्त्याभिरामं तपसाऽभिरामं  
तं भूतनाथं शरणं प्रपद्ये ॥ ७ ॥

आद्यं ब्रह्मसनातनं शुचिपरं सिद्धिप्रदं कामदं  
सेव्यं भक्तिसमन्वितं हरिहरैः सह साधुभिः ।  
योग्यं योगविचारितं युगधरं योग्याननं योगिनं  
वन्देऽहं सकलं कलङ्करहितं सत्सेवितं भैरवम् ॥ ८ ॥

॥ फलश्रुतिः ॥

भैरवाष्टकमिदं पुण्यं प्रातःकाले पठेन्नरः ।  
दुःस्वप्ननाशनं तस्य वाञ्छितर्थफलं भवेत् ॥ ९ ॥

राजद्वारे विवादे च सङ्ग्रामे सङ्कटेत्तथा ।  
राज्ञाक्रुद्धेन चाऽऽज्ञप्ते शत्रुबन्धगतेतथा  
दारिद्र्यश्चदुःखनाशाय पठितव्यं समाहितैः ।  
न तेषां जायते किञ्चिद् दुर्लभं भुवि वाञ्छितम् ॥ १० ॥

॥ इति श्रीस्कान्दे महापुराणे पञ्चमेऽवन्तीखण्डे  
अवन्तीक्षेत्रमाहात्म्याऽऽन्तर्गते श्रीभैरवाष्टकं संपूर्णम् ॥

Encoded and proofread by Gopal Upadhyay gopal.j.upadhyay at gmail.com

---

—  
*Shri Bhairava Ashtakam*

pdf was typeset on September 16, 2023

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

